UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
BAHADUR SHAHZAFAR MARG
NEW DELHI - 110 002.
Minor Research Prroject

Executive Summary

"Shastriva Sangeet Ke Unnayan Me Guru Mandir Sansthan (Karanja) Ki Bhumika"

Dr. Kaumudi Kshirsagar
Asst.Professor,
Dept. of Music Sitabai Arts College, Akola (MS)

Summary of the Project :

प्रारंभ से ही धर्म का आधार ले कर विकसित हुई संगीत कला आज भी अपनो पवित्रता व उज्जवलता के कारण मोक्षप्राप्ति के साधन स्वरुप जानी जाती है। संगीत को सहे जने में, संवारने में, उसे जन सामान्य के हृदय में रचाने बसाने में देवालयों का योगदान नि:शंक वन्दनीय है। देवालय संगीत की इस धरोहर का चरमोत्कर्ष भक्तियुग (लगभग १५ वीं से १७ वीं शताब्दी तक) को माना जाता है, जब संगीत - नृत्य - साहित्य - काव्य - स्थापत्य - चित्र इत्यादि समस्त कलाए अपने पूर्ण यौवन पर थी। दाक्षिणात्य मंदिरों की नत्य परंपराएं हों, या भक्तिआन्दोलन में सूर - तुलसी - मीरा - कबीर की गेय रचनाएं - धर्म के कणकण में हमें संगीत रचा-बसा दिखता है, या यों कह लें कि सखाओं की भांति वे हाथ में हाथ डालकर प्राचीन काल से चले आ रहे हैं।

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की लहर के फलस्वरुप उत्तर भारत में अनेक संप्रदायों यथा, वैष्णव, शैव, निम्बार्क, रामानन्दी, राधावल्लभ, हरिदासी इत्यादि संप्रदायों का प्रचार-प्रसार व्यापकता से हुआ और दमनकारी मुस्लिम आक्रान्ताओं से पीडित जनता ने मन:शांति तथा इष्टपूजन हेतु इन संप्रदायों की शरण ली। इसके भी लगभग एक सदो पूर्व महाराष्ट्र में दत्त संप्रदाय का प्रचार-प्रसार अपने चरमोत्कर्ष पर था। महाराष्ट्र के विदर्भ प्रांत की एक छोटी सी नगरी में जन्मे

नरहरी जी आगे चलकर 'नृसिंह सरस्वती' नाम से विख्यात हुए वे इस संप्रदाय के दूसरे महापुरुष थे। इन्हीं के शिष्य 'सरस्वती गंगाधर' ने 'गुरुचरित्र' नामक ग्रन्थ लिखा जिनका समय चौदहवीं शती का उत्तरार्ध है।

स्वामी नृसिंह सरस्वती की जन्मभूमि कारंजा (लाड) में स्थित गुरुमंदिर संस्थान अपनी स्थापना से लेकर वर्तमान तक निरन्तररुप से विविध अवसरों पर सांगीतिक प्रस्तुतियों के आयोजन की परंपरा को सहेजे हुए है। समूचे विश्व के मानचित्र पर अध्यात्म व संगीत को जोडने वाली एक लघु इकाई के रुप में उभरे कारंजा स्थित गुरुमंदिर संस्थान के योगदान को उजागर करना इस शोध प्रबंध का उद्देश्य है। गुरु मंदिर में विगत कईं वर्षों से आनेवाले कलाकारों के साक्षात्कार, यहां पर उलब्ध रेकॉड से मिलने वाले संदर्भ, मंदिर के विश्वस्त समिती से की गई बातचीत और जनसामान्य के सांगीतिक अनुभव कथन इस शोधप्रकल्प की आधारशिला है।

- पं. उल्हास कशाळकर, पं. अजित कडकडे, पं. श्रीधर फडके, श्री शौनक अभिषेकी, पं. राहुल देशपांडे, सौ. आशा खाडिलकर, सौ. मंजूषा पाटील, सौ. कमल भोंडे, नृत्यांगना, शांभवी वझे आदि कलाकारों के निरन्तर चली आ रही प्रस्तुतियां यहां की जनता के 'कानसेन' होने की परिचायक हैं। यहां सेवा देने वाले स्थानीय स्तर से ले कर राष्ट्रीय स्तर तक के कलाकारों में संस्थान द्वारा कोई भद नही किया जाता शास्त्रीय गायन के साथ ही कीर्तन, भजन, व प्रवचन इस डेढ मासी उत्सव के विशेष आकर्षण हैं। नागपुर के अंध विद्यार्थियों की सांस्कृतिक प्रस्तुति का आयोजन, मंदिर प्रशासन की सामाजिक दायित्व निर्वाह की प्रवृत्ति दर्शाता है, इसमें शंका नही।

प्रस्तुत शोध प्रकल्प में 'धार्मिक आस्था व संगीत' नामक प्रथम अध्याय में संगीत व धर्म को परस्पर सहसंबंधित करते हुए द्वितीय अध्याय 'दत्तावतार व नृसिंह सरस्वती' में विभिन्न दत्त अवतारों व महाराष्ट्र - आंध्र व गुजरात में प्रस्तृत दत्त संप्रदाय की चर्चा की गयी हैं। तृतीय अध्याय में कारंजा नगरी के भौगोलिक व ऐतिहासिक विवेचन के पश्चात् चतुर्थ अध्याय में संस्थान से मिले

रेकॉर्ड से प्राप्त संदर्भो के आधार पर यहां आनेवाले कलावंतों को उद्धृत किया गया है। पांचवे और अंतिम अध्याय 'उपसंहार' में पूर्व अध्यायों को संक्षिप्त विवेचितकर शोध प्रकल्प से प्राप्त उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया है।भी लगभग एक सदी पूर्व महाराष्ट्र में दत्त

संगीत के हफ्तों चलने वाले जलषों की बातें, अब कहनियां बन चुकी हैं, रेडिओं की जगह हातभर के मोबाईल ने ले ली है, गाना सुनने के लिए सभागृह में जाने की बजाय सी.डी./डी. वी. डी. लगा कर घर में 'होम-थियेटर' पर सुनना पसंद बनता जा रहा है। कलाकार के सामने बैठ उसकी कला की सुनना, दाद देना यह संस्कृति मानो खोती चलो जा रही है। ऐसे समय में भी डेढ माह तक की लंबी अवधि तक कलाकारों की प्रस्तुतियों का आयोजन इस संस्थान को दुनियाभर में निराला बना देता है। शायद ही कोई ऐसी जगह हो जहां इसमे लंबे समय तक इस प्रकार के आयोजन देखने को मिलें।

शास्त्रीय संगीत के उन्नयन व प्रसार के लिए निरपेक्ष व निरलस भाव से किये गये इन प्रयत्नों के लिए गुरुमंदिर संस्थान निश्चित ही सराहनीय है, वंदनीय है।

संगीत व अध्यात्म के संस्कारों के सिंचन से जन मन को तृप्त व उदात्त बनाने में देवालयों का योगदान निर्विवाद रुप से अप्रतिम है। इसी श्रृंखला में वर्तमान में गुरुमंदिर संस्थान

*१ प्राचीन ग्रन्थों में नाद की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है :-

न नादेन विना गीतं न नादेन विना स्वरा:।
न तादेन विना नृत्तं तस्मान्नादात्मकं जगत्॥
नादरुप: स्मृतो ब्रह्मा नादरुपो जनर्दन।
नादरुपा पराशक्ति: नादरुपो महेश्वर:॥

नाद को ही चैतन्य, अद्वितीय, आनन्दात्मक, नादब्रह्म बताते हुरा पं. शाङ्गदेव ने अपने ग्रन्ध 'संगीत-रत्नाकर' में कहा है :-

चैतन्य सर्वभूतानाम् वितृत्तं जगदात्मना।

नादब्रह्म तदानंदमद्वितीयमुपास्महे॥

नादोपासनया देवा ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा।

भवन्त्युपासिता नूनं यस्मादेते तदात्मका:॥

स्वामी नृसिंह सरस्वती के जन्म (पौष वद्य २) से उनके शैलगमन (माघ शुद्ध १४) की डेढ महीने को अविधि में संस्थान द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों जैसे भजन - कोर्तन -प्रवचन - सुगम संगीत - शास्त्रीय संगीत - नृत्य - इत्यादि का आयोजन किया जाता है। देश के विभिन्न भागों से आ कर कलाकार यहां अपनी सेवाएं देते हैं।

SIGNATURE OF THE PRINCIPAL INVESTIGATOR	**SIGNATURE OF THE REGISTRAR/PRINCIPAL**